Shiv Rudrashtakam Stotram

॥ शिव रुद्राष्टकम स्तोत्रम हिन्दी मे ॥

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं । विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपं ।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं। चिदाकाशमाकाशवासं भजे हं ॥ 1 ॥

निराकारमोंकारमूलं तुरीयं । गिरा ग्यान गोतीतमीशं गिरीशं ।
करालं महाकाल कालं कृपालं । गुणागार संसारपारं नतो हं ॥ 2 ॥

तुषाराद्रि संकाश गौरं गम्भीरं । मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरं ।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा । लसद्भालबालेन्दु कण्ठे भुजंगा ॥ 3 ॥

चलत्कुण्डलं भ्रू सुनेत्रं विशालं । प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालं ।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं । प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥ 4 ॥

प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं । अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशम् ।
त्रय: शूल निर्मूलनं शूलपाणिं । भजे हं भवानीपतिं भावगम्यं ॥ 5 ॥

कलातीत कल्याण कल्पांतकारी । सदासज्जनानन्ददाता पुरारी ।
चिदानन्द संदोह मोहापहारी । प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥ 6 ॥

न यावद् उमानाथ पादारविंदं । भजंतीह लोके परे वा नराणां ।
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं । प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं ॥ 7 ॥

न जानामि योगं जपं नैव पूजां । नतो हं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यं ।
जराजन्म दु:खौघ तातप्यमानं । प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो ॥ 8 ॥

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये ।
ये पठन्ति नरा भक्तया तेषां शम्भु: प्रसीदति ॥

slokam.in

॥ इति श्री गोस्वामी तुलसिदास कृतम श्रीरुद्राश्ह्टकम संपूर्णम ॥